[A-39] Seat No. _____ No. of printed pages: 3

SARDAR PATEL UNIVERSITY
TY BA (External) Examination
Tuesday, 3rd April
2016
10.30 am - 1.30 pm
HIN-306 - Hindi Paper VI
प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता

कुल गुण : १००

प्र.१ ससंदर्भ व्याख्या कीजिए । (१८)

(अ) ''साधो, देखो जग बौराना ।
साँची कहौ तौ मारन धावै झूँठे जग पतियाना ।
हिंदू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना ।
आपस में दोऊ लड़े मरतु है मरम कोई नहिं जाना ।
बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी प्रात करै असनाना ।
बहुतक देखे पीर ओलिया पढै किताब-कुराना ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, इनमें कौन दिवाना ।।''

अथवा

(अ) ''नैना अंतरि आव तूँ, ज्यौं हौं नैन झँपेऊँ ।
ना हौं देखौं और कूँ, नाँ तुझ देखन देऊँ ।।
कबीर रेख सिंदूर की काजल दिया न जाई ।
नैनूँ रमइया रमि रह्या, दूजा कहाँ समाइ ।।
मन परतीति न प्रेम-रस, नाँ इस तन में ढंग ।
कथा जाणौ उस पीवसूँ कैसैं रहसी रंग ।।''

(आ) ''विंध्य के वासी उदासी तपोव्रतधारी महा, बिन नारि दुखारे ।
गौतम-तीय तरी, 'तुलसी' सो कथा सुनि, भे मुनिवृन्द सुखारे ।
ह्वैहैं सिला, सब चंद्रमुखी परसे पद-मंजुल-कंज तिहारे ।
कीन्हीं भली, रघुनायक जू, करुणा करि कानन को पगु धारे ।।''

अथवा

(आ) ''साहसी समीरसूनु नीरनिधि लंघि, लखि
लंक, सिद्धिपीठि निसि जागो है मसान सो ।
'तुलसी' विलोकि महासाहस प्रसन्न भई
देवी सीय सारिखी, दियो है वरदान सो ।
वाटिका उजारि, अच्छ-धारि मारि, जारि गढ़,
भानुकूल-भानु को प्रताप-भानु भानू सो ।

करत विसोक लोक-कोकनद, कोक-कपि,
कहे जामवंत आयो-आयो हनुमान सो ।''

(इ) ''झलकै अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै ।
हँसि बोलन मैं छबि-फूलन की बरषा, उर-ऊपर जाति है ह्वै ।
लट लोल कपोल कलोल करै, कल कंठ बनी जलजावति ह्वै ।
अँग-अँग तरंग उठै दुति की, परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै ।।''

अथवा

(इ) ''कारी कूर कोकिला, कहाँ को बैर काढ़ति री,
कूकि कूकि अब ही करेजो किन कोरि ले ।
पेड़े परे पापी ये कलापी निसद्यौस ज्यौंही,
चातक, घातक त्यौंही तू हू कान फोरि लै ।।
आनंद के घन प्रान-जीवन सुजान बिना,
जानि कै अकेली सब घेरौ दल जौरि लै ।
जौ लौ करैं आवन बिनोद-बरसावन वे,
तौ लौ रे डरारे बज्र मारे घन घोरि लै ।।''

प्र.२ समाज सुधारक कबीर एवं भक्त कवि कबीर का सोदाहरण परिचय दीजिए । (१६)

अथवा

प्र.२ कबीर के पदों में प्रस्तुत भावगत एवं कलागत सौंदर्य को उदाहरण सहित निरुपित कीजिए ।

प्र.३ 'कवितावली' की काव्यगत विशेषताओं पर विस्तृत प्रकाश डालिए । (१६)

अथवा

प्र.३ 'कवितावली' का काव्य स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसके कथानक की विशेषताएँ लिखिए ।

प्र.४ घनानंद की कविता में विरह, प्रेम एवं सौंदर्य तीनों का अन्यतम चित्रण हुआ है''- इस कथन की उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए । (१६)

अथवा

प्र.४ घनानंद के काव्य में प्रस्तुत भावपक्ष एवं कलापक्ष की उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए ।

प्र.५ (१६)

(अ) भूषण का कृतित्व ।

अथवा

(अ) मीरा की भक्तिभावना ।

(ब) विद्यापति का साहित्यिक परिचय ।

अथवा

(ब) सूफी कवि जायसी ।

प्र.६ निम्नलिखित अतिलघुत्तरी प्रश्नों में से **किन्हीं अठारह** के उत्तर लिखिए । (१८)

१) कबीर ने गुरु और गोविंद दोनों को एक क्यों बताया है ?

२) कबीर के काव्य-संग्रह का नाम क्या है ?

३) कबीर की साखी के अंग क्या और कौन कौन से हैं ?

४) कबीर ने सत्गुरु को सच्चा शूरवीर क्यों कहा है ?

५) निर्गुण भक्ति की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?

६) कबीर के अनुसार गुरु में कैसे गुण होने चाहिए ?

७) कबीर के राम कैसे हैं ?

८) सगुण भक्ति शाखा की दो कड़ियों में तुलसीदास किस धारा के साथ जुड़े हुए हैं ?

९) तुलसीदास के समय में किस मुसलमान राजा का शासन था ?

१०) कवितावली के बालकांड में मुख्य दो प्रसंग कौन से हैं ?

११) किष्किन्धाकाण्ड में किस प्रसंग का वर्णन है ?

१२) सुंदरकाण्ड की कथा में कौन से प्रसंग वर्णित है ?

१३) कवितावली के लंकाकाण्ड में कितने छंद है ?

१४) सुजान से घनानंद का क्या संबंध था ?

१५) घनानंद के गीत गाने के पश्चात् क्या हुआ ?

१६) वृँदावन में घनानंद ने किस संप्रदाय से दीक्षा ली थी ?

१७) घनानंद द्वारा प्रयोजित रीतिकालीन स्वच्छन्द धारा को अन्य किस नाम से जाना जाता है ?

१८) आचार्य शुक्लजी घनानंद के बारे में क्या कहते हैं ?

१९) घनानंद किस बात से अधिक दुखी थे ?

२०) मेघों से घनानंद क्या कामना करते हैं ?

☺☺☺☺☺